10 / 02 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सर्व शक्तियों सहित सेवा में समर्पण हो जाने का अनुभव

➢➢ मैं ज्ञानी तू आत्मा हूँ..

➢➢ योगी तू आत्मा हूँ..

➳_ ➳ मैं भक्ति में गायन और पूजन योग्य आत्मा हूँ..

→ मैं आत्मा स्वयम की गहराई से चेकिंग कर रही हूँ...

- क्या इस समय भी मेरे संपर्क में आने वाली आत्माएं
- ब्राह्मण आत्माएं
- और अज्ञानी आत्माएं

▸ मुझे श्रेष्ठ और पूज्य की नजर से देखती हैं..

- साथी और संपर्क में आने वाली आत्माओं को मुझ विशेष आत्मा के गुण अनुभव में आते हैं..

▸ अनुभव होने से ही वे मन में और वाणी में आत्मा के गुणों का गायन करेंगी...

➳_ ➳ मैं देख रही हूँ...

→ कि मैं आत्मा ऐसी पूजन और गुणगान कराने वाली ज्ञानी और योगी तू आत्मा बनती जा रही हूँ..

→ साथ ही मैं यह भी चेक कर रही हूँ कि मेरे सर्व गुणों का गायन हो रहा है या थोड़े गुणों का...

→ मैं अपने सभी सब्जेक्ट्स के खाते को चेक कर रही हूँ...

- कहाँ तक मैंने जमा किया है...
- मन वाणी और कर्म से कहाँ तक हर सब्जेक्ट को संपन्न किया है...

- मैं आत्मा सिर्फ कल्याणकारी बनी हूँ या विश्व कल्याणकारी बनी हूँ...

▸ स्वयम की गहराई से चेकिंग करके और चेंज करके मैं संपन्न बनती जा रही हूँ...

➢➢ साक्षात्कार मूर्त बनना

➳_ ➳ मैं सर्व अधिकारी आत्मा हूँ...

→ सर्व कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ...

- स्थूल और सूक्ष्म मन, बुद्धि और संस्कारों की भी अधिकारी आत्मा हूँ...

▸ मैं प्रकृतिपति आत्मा हूँ...

▸ प्रकृति का कोई भी तत्व मुझे आकर्षित नहीं कर सकता..

- ▶ मैं मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा हूँ...
- ▶ प्रकृति के आकर्षण से परे हूँ...
- ▶ व्यक्त भाव से परे हूँ...
- ▶ अव्यक्त और मास्टर आलमाइटी अथोरिटी हूँ...

■ मैं बाप से वरसे में प्रापत सर्व शक्तियों की अधिकारी आत्मा हूँ..

- ▶ जब चाहे तब किसी भी शक्ति को प्रयोग में ला सकती हूँ...

➳_ ➳ मैं सर्व के प्रति उपकारी आत्मा हूँ...

→ मेरे मन में हर एक के लिए शुभ भावना और श्रेष्ठ कामनाएं हैं...

→ मुझ आत्मा ने स्वयम को सर्व शक्तियों सहित सेवा में समर्पित कर दिया है...

→ नाम मान शान की स्थूल कामना का मैंने त्याग कर दिया है...

→ अपने समय, सुख को सर्व के प्रति महादानी बन दान कर रही हूँ..

■ लेने की इच्छा छोड़ देने वाली मैं महादानी, परोपकारी आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मैं सर्व की सत्कारी आत्मा हूँ..

→ मैं सर्व की सेवाधारी आत्मा हूँ...

→ वाणी से सेवा

→ संपर्क द्वारा सेवा

→ सेल्वेशन द्वारा सेवा

→ भिन्न भिन्न साधनों द्वारा सेवा

→ अपने हर गुण द्वारा दान करना

→ स्वयम के संग का रंग चढ़ाना...

■ इन भिन्न भिन्न रीति से मैं सेवा कर रही हूँ...

■ मैं होपलेस केस में भी सेवा से अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो सम्मान दे रही हूँ...

■ छोटे बड़े सभी का सत्कार कर रही हूँ...

■ मैं ग्लानी करने वाले का भी गुणगान कर रही हूँ..

➢➢ मैं महादानी और चक्रवर्ती आत्मा हूँ...

➳_ ➳ आसपास के सर्व स्थानों पर सेवा के निमित्त बन रही हूँ...

➳_ ➳ संगम के इस वरदानी समय को मैं हर प्रकार से सफल कर रही हूँ...

→ सर्व साधनों और संपत्ति को सेवा प्रति यूज कर रही हूँ..

■ मैं विश्व कल्याणकारी सो विश्व राज्य अधिकारी आत्मा बनती जा रही हूँ...

■ विश्व के आगे बापदादा का जय जयकार कराने के निमित्त बन रही हूँ...